ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

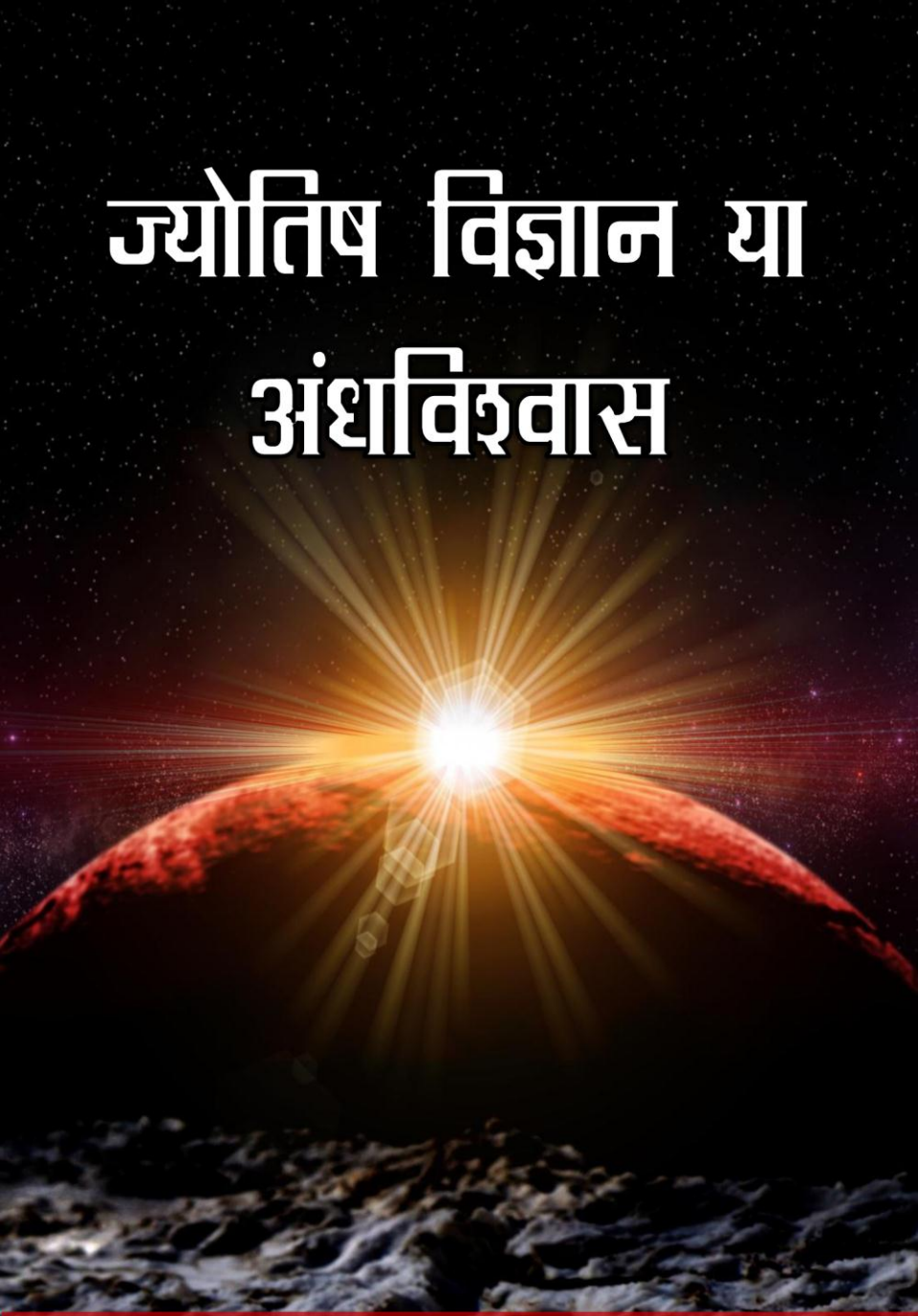

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

Sample Copy, Not For Distribution

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास...

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001
Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-923735-3-9

Price: ₹530.00

The aim of this book is not to criticize, insult, oppress and dominate any present/modern knowledge or studies or culture or believes. Any such issue arises is entirely a misunderstanding of one, who claiming so and either writer, writer or/and Educreation does not hold any responsibility and is not responsible for any such issues arises.
The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation. Readers are requested to use their intelligence and knowledge while reading and understanding contents of this book. writer or/and Educreation does not hold any responsibility and is not responsible for any social, political, cultural, economic, commercial, national, international, educational or other problems or/and conflicts raised because of reading this book, using , implementing facts, formulas and other things given in this book, in any way or whatsoever.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

विश्व की प्रथम पुस्तक जिसमें ज्योतिष व विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन व सार का विवेचन

लेखक

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल

EDUCREATION PUBLISHING

(Since 2011)

www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

ज्योतिष के जिज्ञासुओं को ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वृद्धि के लिये अद्वितीय पुस्तक

समस्त विश्व में वर्तमान समय में यह अजीब विडम्बना है कि, ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान विषय को मानने वाले करते हैं एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते हैं लेकिन दोनों वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष कर, दूसरी विधा को निम्न व अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है लेकिन मेरे विचार से यह कार्य न ही उचित है एवं न ही समस्या का समाधान है।

लेकिन 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास' एक ऐंसी पुस्तक जिसमें प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों का वर्णन, ज्योतिष की उपयोगिता, ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान में अंधविश्वास क्यों व कैसे प्रवेश कर गया एवं ज्योतिष को आधुनिक विज्ञान के समान कैसे प्रयोग किया जाये, जैसे विभिन्न कारणों व समाधान बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया, दूसरी तरफ ज्योतिष विज्ञान के वैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डालने का अद्वितीय प्रयास किया गया है, इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वर्द्धन के लिये वरदान साबित होगी।

Sample Copy. Not For Distribution.

लेखक का परिचय

आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल
बी. एस सी.(बायो) एम.ए. (अग्रेंजी साहित्य) ज्योतिष मर्मज्ञ उपाधि एवं गोल्ड मेडेलिस्ट
एक्युप्रेशर, सुजोक, चाइनीज व जर्मन एक्युप्रेशर उपचार विशेषज्ञ एवं रैकी मास्टर
वर्तमान पता – विवेकानन्द नगर एम.आई – जी 4 सेंट्रल स्कूल के पीछे दमोह (म.प्र.)
मो. 09300694736, 8109442751
ई.मेल - astro.rppatel@gmail.com
वेबसाईट - www.bhoojyotish.com
www.bhoodharam.com

जीवन परिचय

रज्जन प्रसाद पटैल का जन्म का जन्म 15 सितंबर 1973 में म.प्र. दमोह जिले के कनारी गॉव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव से हुई एवं उच्च शिक्षा बी.एस.सी.(बायो), एम.ए.(अग्रेंजी साहित्य) दमोह से प्राप्त कर, जिज्ञासु व समाज सेवा प्रवृत्ति के कारण 1997 में जबलपुर से एक्युप्रेशर व चुंबकीय उपचार प्रशिक्षण प्राप्त कर, दमोह में एक्युप्रेशर व चुम्बकीय उपचार पद्धति से उपचार सेवा प्रारंभ की। इसी बीच 1 दिसंबर 1998 कलकत्ता में अंतर्राष्ट्रीय वैकल्पिक उपचार महासम्मेलन में गोल्ड मेडल से सम्मानित हुये। वैकल्पिक उपचार की जापानी ध्यान पद्धति रैकी में मास्टरशिप कोर्स किया।

उपचार के साथ–साथ स्वरुचि व विभिन्न जिज्ञासाओं के समाधान के उद्देश्य से ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन प्रारंभ किया। सतत् गहन अध्ययन एव क्रमशः बहुत सी जन्मकुण्डलियों पर प्रायोगिक परीक्षण करते हुये ज्योतिष शास्त्र में पारंगता हासिल की,

Sample Copy. Not For Distribution.

इसी क्रम में ज्योतिष पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख भेजना प्रारंभ किया।

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली ने ज्योतिष मर्मज्ञं उपाधि चार विषयों पर प्रदान की, सर्वप्रथम मई 2006 में सर्वश्रेष्ठ लेख 1–जन्म कुण्डली में संतान योग बाधा व उपाय, एवं क्रमशः 2–जन्म कुण्डली में कैंसर योग, 3–जन्मकुण्डली में मांगलिक दोष परीक्षण मांगलिक का मांगलिक या अमांगलिक से विवाह मिलान, 4–जन्मकुण्डली में विवाह व प्रेम विवाह योग, विवाह मे देरी, तलाक व दाम्पत्य जीवन सुधारने के उपाय।

आचार्य पटैल ने अन्य ज्योतिष विषयों पर जैसे, 1.– जन्मकुण्डली में बहुसंबंध व बहु विवाह योग। 2– जन्मकुण्डली में व्यापार या नौकरी योग एवं विषय चयन, 3–जन्मकुण्डली में संतान योग व आधुनिक मेडीकल विज्ञान का आनुवॉशिकी सिद्धान्त जैसे विषयों पर राष्ट्रीय ज्योतिष महासम्मेलनों में शोध पत्र वाचन कर चुके एवं शोध पत्र, ज्योतिष रिसर्च जनरल दिल्ली पत्रिका में छप चुके। माह सितंबर 2009 में अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ दिल्ली से मान्यता व संबंद्धता प्राप्त कर दमोह शहर में स्वयं की संस्था' सिद्धी विनायक ज्योतिष प्रशिक्षण, परामर्श व रिसर्च केंद्र प्रारंभ किया एवं लगातार ज्योतिष ज्ञान का प्रचार–प्रसार व लोगों की समस्या निदान व समाधान कार्य संचालन कर रहे हैं। लेखक के द्वारा अभी तक चार हिन्दी पुस्तकों का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका है। 1–भू–ज्योतिष, 2–भू–ज्योतिष भाग एक, 3–ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास, 4– भू–धर्म एवं विश्व बंधुत्व का उदय।

Sample Copy. Not For Distribution.

विषय सूचि

क्र.	विषय	पृष्ठ
	लेखक का परिचय	v
	सत्यम शिवम् सुंदरम	x
	ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय की आवश्यकता क्यों?	xiv
1.	प्राचीन ज्योतिष क्या है?	1
2.	पंचाँग	2
3.	जन्मकुण्डली या जन्मपत्री क्या है?	15
4.	आकाशीय नक्षत्र मंडल, राशि मंडल व नवग्रह पथ	17
5.	जन्मकुण्डली में लग्न व भाव	18
6.	बारह राशियाँ व उनसे संबंधित गुणधर्म	22
7.	प्राचीन ज्योतिष के सूत्र	29
8.	नवग्रहों से संबंधित गुणधर्म	34
9.	लग्नकुण्डली व द्वादश भाव विचार	64
10.	भावेशों का बारह भावों में विभिन्न मतान्तर के अनुसार फल	67
11.	जन्मकुण्डली या जन्मपत्री के बारह भावों के अनुसार फल	91
12.	संतान जन्म पर ज्योतिष और आधुनिक विज्ञान के आधार पर विचार	101
13.	ज्योतिष और रोगों पर प्राचीन सिद्धांत व मेरा व्यक्तिगत अध्ययन	115
14.	बारह राशियाँ, भाव व नवग्रहों का नौकरी या व्यवसाय से संबंध	134
15.	प्राचीन ज्योतिष में वर्णित विभिन्न प्रकार के योग	142
16.	फलादेश संबंधी विशेष नियम	155
17.	द्वादश लग्नों में कैंसे करें वास्तविक फलादेश?	156

Sample Copy. Not For Distribution.

18.	विशेष फल	392
19.	ज्योतिष फलादेश संबन्धी नियम	393
20.	विंशौत्तरी दशाफल	395
21.	ग्रहों के अशुभ फल	406
22.	ज्योतिष एवं नवग्रह उपाय	411
23.	रत्नों के प्रकार	412
24.	नवग्रह एवं रुद्राक्ष	417
25.	नवग्रहों से संबंधित दान	425
26.	रंगो से करें नवग्रह संतुलन	427
27.	सूर्य किरण उपचार विधि से नवग्रह संतुलन	428
28.	ग्रहों से संबंधित ध्यान	429
29.	लाल किताब व नवग्रह उपाय	431
30.	जन्मकुण्डली का अध्ययन कैसे करें?	434
31.	वास्तुशास्त्र का परिचय	439
32.	वास्तु सम्मत मकान में उपयुक्त स्थानों का सारांश	442
33.	जैसा खाया अन्न वैसा हो मन्न	445
34.	ज्योतिष व कर्म सिद्धान्त	447
35.	विज्ञान	450
36.	जीव विज्ञान का कार्य क्षेत्र व उद्देश्य	458
37.	विज्ञान की शुरुआत	459
38.	अन्धविश्वास क्या है?	464
39.	ज्योतिष एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव देता है?	466
40.	ज्योतिष में उत्प्रेरक व एन्जाइम सिद्धान्त	467
41.	ज्योतिष व आकर्षण का सिद्धान्त	472
42.	क्या ज्योतिष व विज्ञान एक दूसरे के विरोधी हैं?	473
43.	वर्तमान ज्योतिष में अन्धविश्वास	474
44.	क्या विज्ञान में अंधविश्वास नहीं है?	477
45.	विज्ञान को स्वीकारोक्ती कैसे मिली?	483
46.	मानसिक समस्या व ज्योतिष	484
47.	ज्योतिष व विज्ञान में व्यौहारिक विभिन्नतायें	486

Sample Copy. Not For Distribution.

48.	क्या ज्योतिष को विज्ञान की कसौटी की आवश्यकता है?	488
49.	ज्योतिष के संबंध में वर्तमान समय में मजेदार तथ्य	491
50.	ज्योतिष की वैज्ञानिकता पर विचार	493
51.	वर्तमान समय विज्ञान का समय	496
52.	जीवन की उत्पत्ति संबंधी प्रसिद्ध वैज्ञानिक ओपेरिन का सिद्धान्त	500
53.	आधुनिक विज्ञान के आधार पर ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र मॉडल्स	504
54.	भू–ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र मॉडल का चित्र	507
55.	दस ग्रह मंत्र	513
56.	दस ग्रह स्त्रोत	514
57.	विश्व शाँति प्रार्थना	515

Sample Copy. Not For Distribution.

सत्यम शिवम सुन्दरम

सूर्यःपितामहो व्यासो वशिष्ठोअत्रिः पराशराः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुअंगिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनिकोअष्टादशाश्चैते ज्योतिशास्त्रःप्रवर्त्तकाः।।

सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पाराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलिस, च्यवन, यवन, भृगु एवं शौनक ये अठारह ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक बतलाये गये हैं। ऋषि पाराशर जी ने उक्त अठारह आचार्यों के अतिरिक्त पुलस्त्य नाम के आचार्य को प्राचीन ज्योतिष आचार्यो में सम्मिलित किया है।

मैं अल्प बुद्धि मानव उन सभी उन्नीस प्राचीन आचार्यों को प्रणाम करता हूँ। मैं प्रणाम करता हूँ, उन सभी आचार्यो व विद्वानों को जिनका नाम ज्योतिष के इतिहास में वर्णित नहीं है व मैं प्रणाम करता हूँ उन आचार्यों व ज्योतिष विद्वानों को जो इस पवित्र कार्य के द्वारा मानव सेवा कार्य में संलग्न है। यह अजीब विडम्बना है कि ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान विषय को मानने वाले करते एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते हैं, लेकिन दोनों वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष कर, अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है लेकिन मेरे विचार से यह कार्य न ही उचित व न ही समस्या का समाधान है। प्रकृति द्वारा निर्मित संयोग कि, मैंने बी.एस.सी. (बायोलाजी) एवं ए म.ए, (अंग्रेजी साहित्य) का अध्ययन किया व करीब चार वर्षों तक बायोलॉजी व विज्ञान विषय का प्रायवेट विद्यालयों में अध्ययापन कार्य किया। 1998 में जीवन में अजीब मोड़ आया कि वैकल्पिक उपचार पद्धति एकयुप्रेसर का प्रशिक्षण प्राप्त कर उपचार कार्य प्रारंभ कर दिया। एकयुप्रेसर उपचार के साथ–साथ रैकी मास्टरशिप का कोर्स किया एवं चायनीज एंक्युपंचर में टाईम एकयुपंचर विषय का अध्ययन करते ही मेरे मन में भारतीय ज्योतिष विधा जानने की इच्छा जाग्रत

Sample Copy. Not For Distribution.

हुई एवं स्वयं ने निरन्तर अध्ययन, प्रयोग से पाया कि ज्योतिष एक कारगर विधा है जो कि मानव के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ के साथ–साथ मानव के जीवन से जुड़ी अन्य समस्याओं का निदान व समाधान ज्योतिष शास्त्र में उपलब्ध है। लेकिन मेरे साथ मुख्य समस्या थी, जो मैंने पूर्व में कही, जिस पर में निरंतर विचार करता रहता था कि 'ज्योतिष का उपयोग किसी न किसी रुप में विज्ञान वाले करते एवं विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग ज्योतिषी करते लेकिन दोनो वर्ग एक दूसरे की आलोचना व कटाक्ष करते एवं अपनी विधा को ही उच्च सिद्ध करने का प्रयास करते है'। मैंने अभी तक बहुत से शोध लेख लिखे व मेरा प्रयास रहा कि उक्त लेख सत्य, सारगर्वित व उचित हों, जो कि तथ्यों व विज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित हो एवं कपोल कल्पित बातों या कहानियों पर आधारित न हों, विभिन्न ज्योतिष पत्रिकाओं में भेजने का प्रयास किया, जैसे सर्वप्रथम मई 2006 में सर्वश्रेष्ठ लेख 1–जन्म कुण्डली में संतान योग, बाधा व उपाय एवं आधुनिक आनुवाँशकी विज्ञान एवं क्रमशः 2–जन्म कुण्डली में कैंसर योग, 3–जन्मकुण्डली में मांगलिक दोष परीक्षण, मांगलिक का मांगलिक या अमांगलिक से विवाह मिलान, 4–जन्मकुण्डली में विवाह व प्रेम विवाह योग, विवाह में देरी, तलाक व दाम्पत्य जीवन सुधारने के उपाय, उक्त लेखन पर दिल्ली की प्रसिद्ध मैग्जीन के द्वारा सर्वश्रेष्ठ लेखन के लिये चार बार ज्योतिष मर्मज्ञ की उपाधि से सम्मान पत्र प्राप्त हुआ एवं अन्य ज्योतिष विषयों पर जैसे, 1.– जन्मकुण्डली में बहुसंबंध व बहु विवाह योग, जब इस विषय पर मैंने लेखन कार्य किया, संयोग से उसी समय प्रसिद्ध मैग्नीज इंडिया टुडे–ए सी नेल्सन–ओ.आर. जी मार्ग का सेक्स सर्वेक्षण जिसमें गुप्त रुप से बहुसंबंध के विषय में एक सर्वे अलग–अलग पुरुषों व महिलाओं पर किया गया था। जिसमें प्राप्त परिणाम के आकड़े दिये थे, मैंने इंडिया टुडे के आंकड़ो एवं ज्योतिष में प्राप्त योगों से तुलना कर ही लेख लिखा था, लेकिन पत्रिका में मात्र वह लेख ही छापा गया जो मात्र ज्योतिष से संबंधित था, पूरा लेख नहीं प्रकाशित किया, जिससे मुझे काफी कष्ट हुआ, ऐसा काफी बार हुआ, ये तो हमारे देश की प्रवृत्ति है, जिसमें मीठी व कपोल

Sample Copy. Not For Distribution.

कल्पित बाते हों, हकीकत से पर हों, जिनमें थोड़ी सी संस्कृत हो। लेकिन वैज्ञानिक तथ्य न हो, ऐसे वक्तव्य या लेखों को अधिक महत्व दिया जाता है व ऐसे ही लेख छापे जाते है। इसी क्रम में: 2–जन्मकुण्डली में व्यापार या नौकरी योग एवं विषय चयन, 3–जन्मकुण्डली में संतान योग व आधुनिक मेडीकल विज्ञान का अनुवाँशिकी सिद्धान्त आदि विषयों पर शोध पत्र वाचन ज्योतिष महासम्मेलनों में किया एवं उक्त लेख दिल्ली की तिमाही रिसर्च मैग्जीन में भी प्रकाशित हुये। अभी कुछ ही समय पूर्व मैंने एक नये सिद्धान्त भू–ज्योतिष पर लेखन कार्य किया जिसका कापीराईट भी हो चुका है व मेरी 'भू–ज्योतिष पुस्तक' प्रकाशित भी हो चुकी है। भू–ज्योतिष सिद्धान्त में यह रहस्य उजागर करने का प्रयास किया गया कि ज्योतिष में सत्ताईस नक्षत्र, बारह राशियों एवं नव ग्रहों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर (विशेषकर मानव पर) क्रमशः अध्ययन किया जाता। लेकिन कभी–कभी दूर दृष्टि पात करते–करते हुये मनुष्य निकट को भूल जाता है। जिसे दिया तले अंधेरा कहते हैं, क्योंकि प्राचीन ज्योतिषीयों से लेकर आधुनिक कम्प्यूटर ज्योतिष के समय में सभी ने नक्षत्र मंडल, राशि मंडल नवग्रहों से निकलने वाली अदृश्य किरणों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर शुभ या अशुभ प्रभाव के बारे में निरंतर अध्ययन किया गया एवं अध्यन जारी है। लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि पृथ्वी भी एक ग्रह है, जिस ग्रह पर मनुष्य व सभी जीवों का जीवन मरण चक्र पूरा होता है। अतः पृथ्वी ग्रह का सभी जीवों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य होना चाहिये। क्योंकि जब कई प्रकाश वर्ष दूर स्थित नक्षत्रों एवं राशियों एवं लाखों, करोड़ों कि.मी. दूर से नवग्रहों का शुभ या अशुभ प्रभाव पृथ्वी पर स्थित जीवों पर हो सकता या होता है, तब पृथ्वी ग्रह का प्रभाव, पृथ्वी वासियों पर क्यों नहीं होगा। अतः पृथ्वी ग्रह का प्रभाव पृथ्वी पर जन्म लेने वाले, जीवन यापन करने वाले समस्त जीवों पर पृथ्वी ग्रह का प्रभाव सबसे अधिक होता ही है। इस प्रकार भू–ज्योतिष का उद्देश्य पृथ्वी व पृथ्वी वासियों पर पृथ्वी के सापेक्ष, नवग्रहों, बारह राशियों व सत्ताईस नक्षत्रों का शुभ या अशुभ प्रभाव का सुक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करना एवं फलित ज्योतिष में महत्व प्रदान

Sample Copy. Not For Distribution.

करने उद्देश्य से लिखी गई। मेरा चिन्तन लगातार इस विषय पर था कि कैसे ज्योतिष और विज्ञान में एक प्यार भरा अटूट संबंध स्थापित किया जाये एवं यह संबंध मात्र ज्योतिष और विज्ञान का ही नही, बल्कि उन विपरीत धाराओं का संबंध होगा जो काफी समय से प्रवाहित हो रही थी। लेकिन मेरा विश्वास है कि प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान के मिश्रण से एक ऐसा महाविज्ञान तैयार होगा जोकि समस्त विश्व के लिये बहुत प्रकार से हितकारी होगा। इस प्रकार जो विचार प्रभु की कृपा व माँ पृथ्वी की असीम दया व कृपा से मेरे मस्तिष्क में कुछ वर्ष पूर्व आया था, आज मैं उस विचार व सिद्धान्त का लेखन प्रारभं कर रहा हूँ। यह अभी लेखन कार्य का प्रारंभिक रुप है, मेरी प्रभु व माँ पृथ्वी से प्रार्थना हैं, मेरे ऊपर कृपा दृष्टि बनायें रखे ताकि मेरी लेखिनी अनवरत चलती रहे। क्योंकि हे! परंब्रम्ह परमात्मा आपके द्वारा रचित समस्त प्रकृति व आपके द्वारा संचालित ब्रम्हाण्डीय प्रक्रिया के गूढ़ रहस्य आप ही जानते है, मैं तो मात्र आपकी प्रक्रिया का कण मात्र भाग हूँ। इसलिये 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय' लेखन का उद्देश्य प्राचीन व आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों का खडंन या आलोचना कर, स्वयं की अहं संतुष्टी करना, किसी भी प्रकार का कोई उद्देश्य नहीं है। 'ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास' विषय लेखन का उद्देश्य ज्योतिष विज्ञान को तर्क संगत, वैज्ञानिक नया एवं मजबूत आधार प्रदान करना है। प्राचीन व आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों में अति अंधविश्वास, रुढ़िवाद, अवैज्ञानिक सिद्धान्तों के कारण पवित्र व उपयोगी ज्ञान गर्त में जा रहा है। उस पतन को रोककर, प्राचीन एवं आधुनिक ज्योतिषीय सिद्धान्तों व नियमों में सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन, आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों की मदद लेते हुये, अनुसंधान के द्वारा, नये, सही, उचित व वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं नियमों को जोड़कर, उचित ज्ञान तैयार करना, जो सत्यम, शिवम, सुंदरम सिद्धान्त पर आधारित हों एवं समस्त मानव समाज के साथ–साथ सभी जीवों व वनस्पतियों लिये उपयोगी सिद्ध हो।

Sample Copy. Not For Distribution.

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास विषय की आवश्यकता क्यों?

मानव स्वभाव प्रारंभ से सदैव जिज्ञासु रहा है, इसी जिज्ञासा के फलस्वरूप प्राचीन मानव ने सर्वप्रथम पंच तत्व क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर अर्थात पृथ्वी, पानी, अग्नि, आकाश व वायु के प्रभाव को मानव व मानवीय जीवन शैली पर जानने का प्रयास किया। तत्पश्चात ज्वार–भाटा, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण जैसी घटनाओं के कारणों को जानने का प्रयास किया। प्रातः सूर्य उदय, शाम को सूर्य अस्त दूसरे दिन पुनः सूर्य दर्शन एवं शाम को सूर्य अस्त के बाद चन्द्र उदय, कुछ दिनों चन्द्र के दर्शन होना कुछ दिनों के पश्चात चन्द्र का आकाश में अदृश्य होना, आकाश में टिमटिमाते विभिन्न प्रकार के तारे, कुछ स्वतंत्र तारे, कुछ समूह में तारे, बहुत से तारा समूहों का विशेष अंतराल के बाद अदृश्य होना व पुन; दिखाई देना, ये कुछ ऐसे बहुत से अनसुलझे प्रश्न थे, जिनका प्राचीन बुद्धि जीवियों ने बिना किसी दूरबीन की मदद के उत्तर जानने का प्रयास किया, इसी क्रम में क्रमशः सत्ताईस, नक्षत्र, अश्वनी, भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाड़ा, उत्तराषाड़ा, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वाभाद्रापद, उत्तराभाद्रापद, रेवती की खोज कर, ज्योतिष विषय का प्रारंभ हुआ। ऐसा माना जाता है कि, पूर्व में सात दिन की जगह नक्षत्रों के नाम पर सत्ताईस दिन होते थे, जैसे प्रथम अश्वनी दिन, द्वितीय भरणी दिन तृतीय कृतिका दिन इस प्रकार क्रमशः बाकी सत्ताईस दिनों के नाम थे। सत्ताईस नक्षत्रों की खोज के बाद क्रमशः भचक्र की बारह राशियाँ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ व मीन या राशि मंडल एवं सात ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरू, शुक्र, शनि आदि ग्रहों की अदृश्य किरणों का प्रभाव मानव जीवन पर अध्ययन किया। यहाँ तक कि पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण में

Sample Copy. Not For Distribution.

सूर्य व चन्द्र की कक्षा के कटान बिन्दु राहू, केतु जैसे छाया ग्रहों को भी ज्योतिष विषय में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार ज्योतिष में सत्ताईस नक्षत्र, बारह राशियों एवं नव ग्रहों का पृथ्वी पर उपस्थित जीवों पर (विशेषकर मानव पर) क्रमशः अध्ययन से ज्योतिष शास्त्र की खोज हुई।

वर्तमान समय विज्ञान का समय है एवं सक्षेंप में कहा जाये कि आधुनिक मानव जीवन, विज्ञान के बिना अधूरा है, तो अतिसयोक्ति नहीं होगी। लेखक की बचपन से विज्ञान, धर्म व दर्शन में अत्यधिक रुचि रही है एवं शैक्षणिक विषय बी.एस.सी (बायोलाजी) एवं वैकल्पिक उपचार पद्धतियों के द्वारा मानव सेवा मेंरठ के रहने के कारण, काफी वर्षों के ज्योतिष विषय का अध्ययन, हजारों जन्मकुण्डलियों का प्रायोगिक परीक्षण के बाद यह पाया कि–

1. वर्तमान समय में ज्योतिषी व ज्योतिष के मानने वाले ज्योतिष को सर्वज्ञ ही नहीं मानते, बल्कि ज्योतिष विषय का भी अतिसयोंक्ति पूर्ण प्रचार प्रसार जारी है।
2. वर्तमान समय में जगह–जगह ज्योतिष के सलाह कार, प्रशिक्षण केन्द्रों की भरमार, मैग्नीज, पैपर में राशिफल, निःशुल्क व शशुल्क जन्मकुण्डली सलाह प्रचार–प्रसार जारी है।
3. ज्योतिष विधा से संबंधित कार्य प्राचीन समय से वर्तमान समय तक सम्मान जनक कार्य माना जाता है। ज्योतिष कार्य एक पवित्र श्रेणी व समाज सुधार का कार्य है, जिसके कारण समाज में ज्योतिषी को काफी सम्मान मिलता है, लेकिन वर्तमान समय में अधिकांश ज्योतिषी समाज से सम्मान व अपने कार्य का परीश्रमिक तो प्राप्त करते हैं, लेकिन बदले में समाज को उचित मार्गदर्शन की बजाय अंधविश्वास परोसने का कार्य कर रहें हैं, जिससे ज्योतिष जैसी पवित्र व उपयोगी विधा गर्त में जा रही है।
4. ज्योतिष वह विषय है, जिसमें व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक जीवन के सभी पहलू जैसे जातक या जातिका का व्यक्तित्व,

Sample Copy. Not For Distribution.

स्वास्थ, रोग की स्थिति साध्य या असाध्य, बचपन सुखमय या दुखमय, प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, एवं आधुनिक टैक्नीकल शिक्षा, शादी के प्रकार लवमैरिज या अरैंज मैरिज, दाम्पत्य जीवन की स्थिति, संतान की संख्याँ, संतान सुख, संतान में अक्षम या नपुंसकता, सामाजिक वातावरण विवरण, जीवन में आने वाली बाधायें, रोग, मकान सुख, वाहन सुख व अन्य विषय, यहाँ तक कि ज्योतिष बताता है कि, व्यक्ति मृत्यु के बाद किस लोक में जायेगा। उक्त विषयों पर जन्मकुण्डली के बारह भावों एवं नवग्रहों के अनुसार समस्या निदान व समाधान किया जाता है।

जैसे लग्न से जातक के वर्ण, आकृति, शारीरिक लक्षण, यश, गुण, स्थान, सुख, प्रवास, तेस्विता, दौर्बल्य विचार प्रथम भाव से किया जाता है। द्वितीय भाव से जातक के वित्त, नेत्र, सुख, विद्या, वाकशक्ति, कुटुम्ब और भोजन आदि का विचार किया जाता है। ज्येष्ठ तथा कनिष्ठ भाई, पराक्रम और साहस, कण्ठ, स्वर, श्रवणेन्द्रिय, आभूषण, वस्त्र, धैर्य, बल, मूल, फल भोजनादि इन सबका विचार तृतीय भाव से किया जाता है। विद्या, माता, सुख, सुगन्ध, गौधन, वन्धु, मनस, गुण, वाहन या राजवाहन, भू–संपत्ति भवन आदि का विचार चतुर्थ भाव से किया जाता है। पंचम भाव से इष्ट देवता, राज्य, पुत्र, पिता, वृद्धि और पुन्य का विचार किया जाता है। रोग, शत्रु, व्यसन और क्षत(चोट) आदि का विचार मंगल, षष्ठ भाव, षष्ठ भाव के स्वामी से विचार किया जाता है। यात्रा, पुत्र, स्त्री (पत्नी) समस्त सुख पूर्व कथित संतान के सुख–दुख आदि को सप्तम भाव से किया जाता है। लग्न और अष्टम भाव के स्वामी और शनि जातक या जातिका की आयु एवं अनिष्ट कारक स्थितियों का विचार किया जाता है। मनुष्यों के भाग्य–प्रभाव, गुरू, धर्म, तपश्चर्यादि और शुभ फलों का विचार नवम भाव और बृहस्पति से किया जाता है। आज्ञा (प्रसासनिक क्षमता), मान–सम्मान, आभूषण (वैभव)वस्त्र, व्यापार, निद्रा, कृषि, प्रवज्या, आगम कर्म जीवन व्यवस्था ज्ञान और विद्या आदि का विचार दशम भाव, दशमेश व सूर्य, बुध, बृहस्पति

Sample Copy. Not For Distribution.

और शनि से किया जाता है। एकादश भाव अर्थात लाभ भाव से मनुष्यों के द्वारा समस्त वांछित धन प्राप्ति, धन वृद्धि आदि का विचार किया जाता है। लग्न से द्वादश भाव, उसके स्वामी औार शनि से सुदूर देश की यात्रा, कष्ट दान शीलता, शयनादि सुख, वैभवादि, धन नाश आदि का विचार किया जाता है।

इस प्रकार ज्योतिष का सूक्ष्म अध्ययन करने पर प्रतीत होगा कि, मानव जीवन से संबंधित समस्त विषयों से संबंधित समस्यायों का निदान व समाधान ज्योतिष से होना चाहिये, लेकिन इतना महत्वपूर्ण विषय या विधा अंधश्विास या छद्य विज्ञान के नाम से जानी जाती है।

5. ज्योतिष में रत्न प्रयोग – रत्न उपचार ज्योतिष का महत्वपूर्ण विभाग है जिसमें सूर्य के लिये माणिक्य, चन्द्र के लिये मोती, मंगल के लिये मूँगा, बुध के लिये पन्ना, बृहस्पति के लिये पीला पुखराज, शुक्र लिये हीरा, शनि के लिये नीला पुखराज अर्थात नीलम, राहु के लिये गोमेंद व केतु के लिये लहसुनियाँ रत्नों का प्रयोग किया जाता है। उक्त नव रत्नों के अतिरिक्त पचहत्तर दूसरे रत्नों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार कुल चौरासी प्रकार के रत्नों व हजारों उपरत्नों का वर्णन मिलता, जिनका प्राचीन काल से वर्तमान समय तक प्रयोग जारी है।

लेकिन रत्न उपचार प्रणाली में अभी तक कोई प्रयोगात्मक व ठोस नियम नहीं बनाये गये कि, किस स्थिति में किस रत्न, रत्नों या उपरत्न का किस मात्रा अर्थात वजन में प्रयोग किया जाना चाहिये एवं शरीर के किस भाग में धारण करना चाहिये। ज्योतिष में एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि, कौन सा रत्न कब धारण किया जाये कभी अशुभ ग्रह का रत्न धारण करवाते, कभी शुभ का रत्न धारण की सलाह देते, अक्सर ज्योतिषी जिस ग्रह की दशा चल रही होती, दशा वाला ग्रह चाहे वह अशुभ हो या शुभ हो लोगों के लिये धारण करने की सलाह देते है। यहाँ तक कि, बहुत से ज्योतिषी नव रत्न

Sample Copy. Not For Distribution.

अंगूठी या नवरत्न माला अर्थात सभी नवग्रहों के नवरत्न एक साथ धारण की सलाह देते हैं।

6. ज्योतिष में मुहुर्त – ज्योतिष में मुहुर्त विषय भी बहुत महत्वपूर्ण विभाग जैसे कि संतान जन्म से संबंधी मुहुर्त व सोलह संस्कार के मुहुर्त, विवाह कार्य से संबंधित मुहुर्त, गृह निर्माण व वास्तु मुहुर्त, व्यापार से संबंधित मुहुर्त व राजकार्य से संबंधित मुहुर्त व अन्य मुहुर्त का वर्णन ज्योतिष शास्त्र में वर्णित है। लेकिन मुहुर्त का प्रयोग ज्योतिषी व अनुयायी के अनुसार स्वयं की परिस्थिती के अनुसार चयन किया जाता है न कि, ज्योतिष शास्त्र के नियमों के अनुसार।

7. वास्तु का प्रयोग – ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण भाग वास्तु जिसमें ग्रह निर्माण संबंधी जानकारी व ज्ञान का उल्लेख है। लेकिन जातक जब एक वास्तुकार से जानकारी लेता तो वह मकान या मकान का कुछ भाग तुड़वाकर कुछ बदलाव का प्रयास करता है। कुछ समय बाद दूसरे वास्तुकार से सलाह लेता है, तब नया वास्तुकार पुराने के द्वारा किये हुये बदलाव को गलत ठहराता एवं कुछ मकान में नये बदलाव की सलाह देता। इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन भर वास्तु सुधार करने का प्रयास करता लेकिन जातक के मकान का वास्तु वास्तुकारों की कृपा से कभी पूर्ण सुधार का नाम नहीं लेता है।
8. ज्योतिष का आधार खगोल अर्थात आकाश में स्थित तारें व विभिन्न ग्रह व विभिन्न ग्रहों, तारों से निकलने वाली ऊर्जा हैं जबकि निदान व उपचार सिद्धान्त कपोल कल्पित कहानियों की पर आधारित बताये जाते हैं, इसलिये अलग अलग ज्योतिषी एक ही व्यक्ति को भिन्न–भिन्न प्रकार के निदान व उपचार बताते।
9. गुरु व पंडित पद का दुरूपयोग –

गुरु ब्रह्मां गुरु विष्णु, गुरु देर्वो महेश्वर;।
गुरु साक्षात परब्रम्हः तस्मे श्री गुरुवे नमः।।

Sample Copy. Not For Distribution.

गुरु ब्रम्हा, विष्णु व महेश है अतः गुरु त्रिशक्ति है, ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु गोविन्द दोउ खडे, काके लांगे पांये।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताये।।

कबीर दास जी। गुरु एवं गोविन्द मेरे सामने खड़े हैं, प्रथम मुझे किसे प्रणाम करना चाहिये? लेकिन प्रथम में गुरु को प्रणाम करुँगा क्योंकि गोविंद के बारे में गुरु आपने ही मुझे बताया है।

सर्वप्रथम पहले श्लोक पर विचार करते है। दूसरीं पक्ति के अनुसार गुरु को प्रणाम करने को कहा गया है, यह उचित है लेकिन गुरु ब्रम्हा, विष्णु व महेश कैसे हो सकता है। क्योंकि ब्रम्हा, विष्णु व महेश तो मात्र एक ही हो सकते हैं। यदि श्लोक सही है तब तो विश्व में करोड़ो ब्रम्ह, विष्णु और महेश हो जायेंगें। मैं गुरु व ज्ञान को, मन आत्मा से प्रणाम करता हूँ, सम्मान करता हूँ व सम्मान करता रहूँगा, लेकिन हाँ एक महत्वपूर्ण तथ्य जो प्रमाणित हो रहे है कि, मात्र चार पक्तियों के कारण नकली गुरुओं का धंधा बड़ गया एवं वास्तविक गुरुओं की कमी हो गई। कबीर दास सी पुनः गुरु के बारे कहते है –

गुरु कीजिये जानिके, पानी पीजे छानि।
बिना विचारे गुरु करे, परै चौरासि खान।।
गुरु लोभ शिष लालची, दोनो खेले दांव।
दोनो बूढ़े बापुरे, चढ़ि पाथर की नॉव।।
गुरु मिला तब जानिये, मिटै मोह तन ताप।
हरष शोष व्यापे नहीं, तब गुरु आपे आप।।

गुरुओं ने शिष्यों को पूर्णतः अंधा कर दिया एवं शिष्य बेचारे गुरुओं से ज्ञान या समस्या समाधान तो प्राप्त कर ही नहीं सकते हैं बल्कि मात्र गुरुओं की सेवा में लगे रहते है, इस आशा के साथ कि, कभी न कभी हमारे ब्रम्हा, विष्णु, महेश की अवश्य कृपा होगी। मेरे दोस्तों

Sample Copy. Not For Distribution.

ईश्वर, ईश्वर ही होता एवं मानव, मानव ही होता है, कोई भी मानव मात्र कुछ से ज्ञान के कारण ईश्वर नहीं हो सकता है। यदि इस प्रकार होता तो फिर एक शिष्य व उसके बहुत से भगवान हों जायेंगें क्योंकि नर्सरी, प्रथम कक्षा से मास्टर डिग्री तक गुरु रुपी भगवानों की भीड़ हो जायेगी।

शास्त्र कहता है कि –

काम क्रोध मद लोभ की, जो लो मन में खान।
तोलो पंडित मूर्खों, तुलसी एकसमान।

महाकवि तुलसी दास जी, कहते है कि जब तक काम, क्रोध, मद, लोभ मानव मस्तिष्क में व्याप्त तब तक मूर्ख व पंडित एक समान होते है। यदि उक्त पैमाने के आधार यदि वर्तमान के पंडितो व गुरुओं का परीक्षण किया जाये तब कितने सही पंडित व गुरु पायें जायेंगें, इसका जवाब देने की जरुरत नहीं है। इस प्रकार वर्तमान समय में गुरु व पंडित अपने शिष्यों को शिष्यों का कर्त्तव्य बताते है व शिष्य कर्त्तव्य पूरा करने का प्रयास भी करते है, लेकिन गुरुजी व पंडित जी का क्या कर्त्तव्य है उनको मालूम ही नहीं है व यदि मालूम है तो निभाते नहीं हैं। It is called one way system that is very dangrouos.

Sample Copy. Not For Distribution.

डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया
अध्यक्ष
बुन्देलखण्ड विकास प्राधिकरण, सागर
(केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त)

कार्या.: विश्राम गृह क्रमांक दो के बाजू में
7, कोर्ट एरिया, सागर-470 001 (म.प्र.)
निवास : 105, निवेदा टाउन
फेस-II, माता मंदिर, भोपाल
मोबा : 09959212393

क्रमांक /01/ /बु.वि.प्रा./

दिनांक 23/2/015

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल ने एक नये विषय पर हमारे प्राचीन वेदों के ज्ञान पर आधारित ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास नाम कि पुस्तक का लेखन कार्य किया जिसमे आचार्य पटैल ने वर्तमान ज्योतिष में अंधविश्वास पर प्रकाश डालते हुये, आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का वर्णन एवं विभिन्न अनुसंधान मान्यता का प्राचीन ज्योतिष विषय में जोड़कर अद्वितीय कार्य किया है। मैं आपके इस लेखन कार्य की हृदय से सराहना करता हूँ, शुभकामनायें देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप निरंतर लेखन कार्य में सफल रहें और हमारे भारतीय प्राचीन ज्योतिष ज्ञान को मानव सेवा हितार्थ समस्त विश्व में फैलाते रहें।

डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया
(भूतपूर्व कृषि मंत्री म.प्र. शासन)
अध्यक्ष
बुंदेलखंड विकास प्राधिकरण सागर म.प्र.

Sample Copy. Not For Distribution.

जयंत मलैया
मंत्री
मध्यप्रदेश शासन
वित्त, वाणिज्यिक कर,
न, आर्थिक एवं सांख्यिकी
एवं जल संसाधन

बी-27, स्वामी दयानंद नगर, भोपाल (म

दूरभाष	मंत्रालय	: 0755-2441
	निवास	: 0755-2554
	फैक्स	: 0755-2675
	विधान सभा	: 0755-2523

क्र. 706 /मं./वित्त, वा.कर/यो.आ.सां./ज.संसा./201

भोपाल, दिनांक 17/01/2016

शुभकामना संदेश

——00——

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री रज्जन प्रसाद पटैल, निवासी एम.आई.जी.4, विवेकानंद नगर, दमोह के द्वारा विगत 15 वर्षों से ज्योतिष, एक्युप्रेशर, रैकी व वैकल्पिक उपचार पद्यतियों के द्वारा लोगों का पूर्ण सेवाभाव से उपचार कर स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है। इनके द्वारा ज्योतिष विज्ञान पर आधारित पुस्तक "ज्योतिष विज्ञान या अन्धविश्वास" का लेख किया जा रहा है, उक्त पुस्तक में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता ज्योतिष में अन्ध विश्वास क्यों व कैसे प्रवेश कर गया आदि कारणों पर प्रकाश डाला गया है। जिससे ज्योतिष विज्ञान के विभिन्न पक्षो को समझने में सहयोग मिलेगा ऐसा मेरा मानना है।

अतः आचार्य श्री पटैल को "ज्योतिष विज्ञान या अन्धविश्वास" पुस्तक के सफल लेखन व प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(जयंत मलैया)

Sample Copy. Not For Distribution.

लखन पटैल
एम.एम.भी(कृषि)
विधायक
54,पथरिया जिला दमोह

मोबा. 9425095703
निवास :
पलेरी चौराहा,दमोह (म.प्र.) 470 661

क्रमांक 612/2016 दिनांक 23/01/16

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आचार्य रंजन प्रसाद पटैल ने एक नये विषय पर हमारे प्राचीन वेदों के ज्ञान पर आधारित **ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास** नाम कि पुस्तक का लेखन कार्य किया जिसमे आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का वर्णन एवं विभिन्न अनुसंधान साक्ष्यों का प्राचीन ज्योतिष विषय मे जोड़कर अद्वितीय कार्य किया है। मैं आपके इस लेखन कार्य की हृदय से सराहना करता हूँ व शुभकामनायें देता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप निरंतर लेखन कार्य मे सफल रहें और हमारे देश के प्राचीन ऋषिओं के ज्ञान को मानव सेवा हितार्थ समस्त विश्व मे फैलाते रहें।

(लखन पटैल)

Sample Copy. Not For Distribution.

गोपाल भार्गव
मंत्री
पंचायत एवं ग्रामीण विकास,
सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन
कल्याण, सहकारिता विभाग
मध्यप्रदेश.

निवास : बी-1, स्वामी दयानंद नगर,
(74 बंगला), भोपाल, (म.प्र.)
दूरभाष | 0755-2441017 (मंत्रालय)
0755-2661271 (नि.)
0755-2441156 (नि.)फैक्स
07585-258401 (का.)
E-mail : gopal_bhar@rediffmail.com

पत्र क्रमांक 9421 ....

भोपाल, दिनांक 20/3/2016...

" शुभकामना संदेश"

मुझे यह जानकर अत्याधिक प्रसन्नता हुई है कि आचार्य रज्जन प्रसाद पटैल ने एक नये विषय "हमारे प्राचीन वेदों के ज्ञान पर आधारित ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास" नाम कि पुस्तक का लेखन कार्य किया जिसमें आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का वर्णन एवं विभिन्न अनुसंधान मॉडल्स का प्राचीन ज्योतिष विषय में जोड़कर अद्वितीय कार्य किया है। मैं आपके इस लेखन कार्य की हृदय से सराहना करता हूँ व शुभकामनायें देता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप निरतंत लेखन कार्य में सफल रहें और हमारे देश के प्राचीन ऋषियों के ज्ञान को मानव सेवा हितार्थ समस्त विश्व फैलाते रहे।

आपका

(गोपाल भार्गव)

Sample Copy. Not For Distribution.

प्रहलाद सिंह पटेल
सांसद (लोक सभा)
दमोह (म.प्र.)

सदस्य :
- ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति
- संसदीय सरकारी उपक्रमों संबंधी समिति
- सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति
- केंद्रीय भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार सलाहकार समिति

14, डा. बी.डी. मार्ग, नई दिल्ली–110 001
फोन : 011–23320121, +91–9013869226

E/8, जटाशंकर रोड, दमोह (मध्य प्रदेश)
फोन : 07812–228867, +91–9425135511

F/23, वैनिका सोसाइटी, शक्ति नगर,
जबलपुर, (मध्य प्रदेश)
फोन : 0761–2426670, +91–9425139000

<u>दमोह, दिनांक 27.01.2016</u>

शुभकामना संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरे संसदीय क्षेत्र दमोह के आचार्य श्री रज्जन प्रसाद पटेल द्वारा प्राचीन वेदों के ज्ञान पर आधारित व आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का वर्णन एवं विभिन्न अनुसंधान माडल्स का प्राचीन ज्योतिष विषय में जोड़ते हुए **"ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास"** नामक पुस्तक का लेखन कार्य किया गया है और यह पुस्तक भारतीय कॉपीराइट आफिस, दिल्ली में रजिस्टर्ड हो चुकी है। श्री पटेल के इस अद्वितीय लेखन कार्य की हृदय से सराहना करते हुए पुस्तक के सफल प्रकाशन की मंगल कामनाओं के साथ हार्दिक शुभकामनायें व कोटिशः बधाई प्रेषित है।

(प्रहलाद सिंह पटेल)

प्रति,
आचार्य श्री रज्जन प्रसाद पटेल,
विवेकानंद नगर, एम.आई.जी.–4,
दमोह म0प्र0

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

प्राचीन ज्योतिष क्या है?

ज्योतिषं वेदांनाम चक्षुः

मानव समाज में लिखित साहित्य का स्थान महत्वपूर्ण होता है। हमारे भारत देश में वह साहित्य जो मानव के लिये उचित या अनुचित का ज्ञान करवाता है, ''शास्त्र'' कहलाते हैं। विभिन्न शास्त्रों में वेदों का स्थान का सबसे महत्वपूर्ण है, लेकिन ज्योतिष को वेदों का ''चक्षु'' कहा जाता है।

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्व वेदांग शास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम।।
विफलान्यन्य शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्को यत्र साक्षिणौ।।

सभी शास्त्रों में मात्र लिखित होने के कारण तर्क–वितर्क होता जो कि, विवाद उत्पन्न करता है, प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता, मात्र ज्योतिष शास्त्र ही प्रत्यक्ष व स्पष्ट है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सूर्य व चन्द्र जो कि, हमें दिखाई ही नहीं देते, बल्कि उनसें निकलने वाली विभिन्न ऊर्जाओं ताप, प्रकाश, शीत से सभी परिचित है।

ज्योतिषंसूर्यादिग्रहाणांबोधकं शास्त्रं।

ज्योतिष शास्त्र वह शास्त्र है, जिसकी मदद से सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि ग्रहों तारों व तारा समूहों जैसे अश्वनी, भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाड़ा, उत्तराषाड़ा, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वाभाद्रापद, उत्तराभाद्रापद, रेवती नक्षत्र, बारह राशियाँ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ व मीन राशियों की गणना व उन सभी का ग्रहों, नक्षत्रों व राशियों का पृथ्वी व पृथ्वी के जीवों पर शुभाशुभ प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

Sample Copy. Not For Distribution.

पंचाँग

तिथि वारिश्च नक्षत्रां योग करणमेव च।
एतेषां यत्रा विज्ञानं पंचाँग तन्निगद्यते।।

पंचाँग अर्थात पाँच अंग, तिथि, वार, दिन, नक्षत्र, योग व करण, अर्थात जिसमें समय की गणना के पाँच अंग, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि का दैनिक विवरण उल्लेख किये जाते हैं, ''पंचाँग'' कहलाता है।

पंचाँग में पाँच अंगों के अतिरिक्त अनेक प्रकार की जानकारियाँ जैसे व्रत, त्यौहार, विभिन्न प्रकार के मुहुर्त, ग्रह स्थिति, ग्रहों का राशि परिवर्तन, ग्रहों का वक्री, मार्गी, खग्रास व अन्य दैनिक जीवन उपयोगी संबंधी अन्य विवरण उपलब्ध रहते हैं। भारतीय लगभग सभी पंचाँग निरयन पद्धति पर आधारित रहते हैं जबकि पाश्चात्य देशों में सायन पद्धति को महत्व देते हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

नक्षत्र

भचक्र जो कि, 360 अंश का होता है व वह भचक्र 27 भागों में बटा रहता है अर्थात एक भाग 13 अंश 20 कला का होता है, यह एक भाग नक्षत्र कहलाता है। प्रत्येक नक्षत्र पुनः 4 भागों में बटा रहता है, जिन्हें नक्षत्र के चरण कहते हैं।

नक्षत्र का नाम	स्वामी	स्वामी ग्रह	अंश व राशि
अश्वनी	अश्विनी कुमार	केतु	00–13.20 मेष
भरणी	काल	शुक्र	13.20–26.40 मेष
कृतिका	अग्नि	सूर्य	26.40 मेष – 10 वृष
रोहणी	ब्रह्मा	चन्द्र	10–23.20 वृष
मृगशिरा	चन्द्रमाँ	मंगल	23.20 वृषभ – 6. 40 मिथुन
आर्द्रा	रुद्र	राहु	06.40–20 मिथुन
पुनर्वसु	अदिती	गुरु	20 मिथुन 03.20 कर्क
पुष्य	बृहस्पति	शनि	03.20 – 16.20 कर्क
अश्लेशा	सर्प	बुध	16.40 कर्क –00सिंह
मघा	पितर	केतु	00–13.20 सिंह
पूर्वाफाल्गुनी	भग	शुक्र	13.20–26.40 सिंह
उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा	सूर्य	2640 सिह –10कन्या
हस्त	सूर्य	चन्द्र	10–23.20 कन्या
चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	23.20 कन्या –06. 40 तुला

Sample Copy. Not For Distribution.

स्वाती	पवन	राहु	06.40–20 तुला
विशाखा	शुक्राग्नि	गुरु	20 तुला–3. 20वृश्चिक
अनुराधा	मित्र	शनि	03.20–16.40 वृश्चिक
ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	16.40 वृश्चिक –00 धनु
मूल	नैऋति	केतु	00–13.20 धनु
पूर्वाषाड़ा	जल	शुक्र	13.20–26.40 धनु
उत्तराषाड़ा	विश्वदेव	सूर्य	26.40 धनु–10 मकर
श्रवण	विष्णु	चन्द्र	10–23.20 मकर
धनिष्ठा	वसु	मंगल	23.20 मकर–640 कुम्भ
शतभिषा	वरुण	राहु	06.40–20 कुम्भ
पूर्वाभाद्रापद	अजैकपाद	गुरु	20 कुम्भ–03.20 मीन
उत्तराभाद्रापद	अहिर्बुध	शनि	03.20–16.40 मीन
रेवती	पूषा	केतु	16.40–30 मीन

Sample Copy. Not For Distribution.

नक्षत्रों के प्रकार

अश्वनी, भरणी, कृतिका, रोहणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाड़ा, उत्तराषाड़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रापद, उत्तराभाद्रापद, रेवती

ध्रुव संज्ञक – उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाड़ा उत्तरा भाद्रपद, रोहणी एवं रविवार ध्रुव संज्ञक होते हैं अर्थात इन नक्षत्रों में स्थिर कर्म, जैसे– गृहारम्भ, बीज बोना, ग्रहादिक शांति, बगीचा लगाना आदि कार्य किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त मृदु नक्षत्र में किये जाने वाले कार्य भी कर सकते हैं।

चर संज्ञक – स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र और सोमवार ये चर नक्षत्र कहलाते हैं, इनमें यात्रा करना, फुलवारी लगाना आदि कार्य शुभ माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त लघुसंज्ञक में किये जाने वाले कार्य भी कर सकते हैं।

उग्र संज्ञक – पूर्वाषाड़ा, पूर्वाभाद्रापद, पूर्वाफाल्गुनी, भरणी, मधा एवं मंगलवार उग्र प्रकृति के माने जाते हैं, अतः इन नक्षत्रों में अग्नि कार्य, शस्त्र बनाना, लड़ने जाना एवं दारुण संज्ञक में किये जाने वाले कार्य भी कर सकते हैं।

मिश्र संज्ञक – विशाखा और कृतिका और बुधवार मिश्रसंज्ञक होते हैं अर्थात अच्छे व बुरे कार्य दोनों के लिये सामान्यतः ठीक माने जाते हैं।

लघु संज्ञक – हस्त, अश्विनी, पुष्य और गुरुवार ये लघु संज्ञक माने जाते हैं, इन नक्षत्रों में दुकान लगाना, शास्त्र अध्ययन, आभूषण बनवाना, शिल्प, कला सीखना आदि कार्य शुभ माने जाते हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

मृदु संज्ञक – मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं, इन नक्षत्रों में गहनें बनवाना या धारण करना, गीत गाना या सीखना, वस्त्र धारण करना आदि कार्य शुभ होते हैं।

तीक्ष्ण और संज्ञक – मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा व अश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक होने के कारण इन नक्षत्रों में उग्र व भयंकर कार्य जैसे हथियार से आक्रमण, युद्ध, कलह एवं अन्य उग्र कार्य किये जाते हैं।

उर्ध्वमुख संज्ञक – आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, रोहणी और शतभिषा उर्धमुख संज्ञक कहलाते हैं अर्थात इन नक्षत्रों में मकान बनवाना, किला बनवाना शुभ होता है।

अधोमुख संज्ञक – मूल अश्लेषा विशाखा, कृतिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रापद, भरणी व मघा, अधोमुख संज्ञक होने के कारण कुआं, बोरबेल व नीव खोदना शुभ माना जाता है।

तिर्यंडमुख संज्ञक – अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, रेवती, मृगशिरा और अश्विनी इन नक्षत्रों में बॉध बॅधवाना, यात्रा और चक्र, रथ इत्यादि बनवाना शुभ होता है।

पंचक संज्ञक – धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।

दग्ध संज्ञक – रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाडा, बुधवार को धनिष्ठा, बृहस्पति वार को उत्तरा फाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा, शनिवार को रेवती दग्ध संज्ञक है।

मासशून्य संज्ञक – चैत्र में रोहणी और अश्विनी, वैशाख में चित्रा और स्वाति, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ा, और पुष्य, आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रावण में उत्तराषाढ़ा और श्रवण, भाद्रपद में शतभिषा और रेवती, अश्विन में पूर्वाभाद्रपद, कार्तिक में कृतिका और मघा, मार्गशीर्ष में चित्रा और विशाखा, पौष में आर्द्रा, अश्विन व हस्त, माघ में श्रवण व मूल, फाल्गुन में भरणीं व ज्येष्ठा मास शून्य नक्षत्र है।

Sample Copy. Not For Distribution.

तिथि

भारत में चन्द्र मास को महत्व दिया जाता है, प्रत्येक चन्द्र मास में दो पक्ष शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष होते हैं एवं पक्ष में 15 तिथियॉ होती हैं। अमावस्या के दिन सूर्य व चन्द्र बिल्कुल 0 अंश पर होते अर्थात बिल्कुल करीब होते हैं। अमावस्या के बाद जैसे ही सूर्य से चन्द्र 12 अंश आगे तक शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि होती है, इसी क्रम 12–12 अंश चन्द्रमाँ बढ़ता जाता एवं सूर्य से चन्द्र 180 अंश होने पर पूर्णिमा होती है एवं पुनः सूर्य के साथ होने पर अमावस्या हो जाती है।

तिथि	स्वामी
प्रतिपदा	अग्नि
द्वितीया	ब्रह्मा
तृतीया	गौरी
चतुर्थी	गणेश
पंचमी	शेषनाग
षष्ठी	कार्तिकेय
सप्तमी	सूर्य
अष्टमी	शिव
नवमी	दुर्गा
दशमी	काल
एकादशी	विश्वदेव
द्वादशी	विष्णु
त्रयोदशी	काम
चतुर्दशी	शिव
पूर्णिमा	चन्द्रमाँ
अमावस्या	पितर

Sample Copy. Not For Distribution.

तिथि 24 घंटे में कभी भी बदल सकती है। वैसे पंचाँगो में प्रत्येक तिथि का समाप्ति काल दिया रहता है जिसका अर्थ होता है, पूर्व तिथि की समाप्ति एवं आगे की तिथि की शुरुआत।

उद्या तिथि – ज्योतिष के मुहुर्त भाग में तिथि का अधिक महत्व है लेकिन तिथी 24 घंटे में कभी भी बदल सकती है, इसलिये प्राचीन ज्योतिषीयों के निर्णय के अनुसार सूर्योदय काल के समय की तिथि पूरे दिन मानी जाती है, सूर्योदय के समय की तिथि अर्थात ''उद्या तिथि'' कहलाती है।

क्षय तिथी – वह तिथि जो सूर्योदय के बाद प्रारंभ होती एवं अगले सूर्योदय के पूर्व समाप्त हो जाती, ''क्षय तिथि'' कहलाती है। चूँकि यह तिथि सूर्योदय के समय नहीं होती। अतः इस तिथि को नहीं माना जाता है।

वृद्धि तिथि – वह तिथि जो सूर्योदय के पूर्व प्रारंभ होती एवं अगले सूर्योदय के बाद तक रहती है, चूँकि यह तिथि दो सूर्योदय काल में रहती है। अतः इसको दो दिन माना जाता है, इसलिये यह तिथि वृद्धि तिथि कहलाती है।

Sample Copy. Not For Distribution.

तिथियों की संज्ञायें

तिथि	संज्ञा
1, 6, 11	नन्दा
2, 7, 12	भद्रा
3, 8, 13	जया
4, 9, 14	रिक्ता
5, 10, 15	पूर्णा

सिद्धा तिथियाँ – मंगलवार को 3, 8, 13 बुधवार को 2, 7, 12, बृहस्पतिवार को 5, 10, 15, शुक्रवार को 1, 6, 11, एवं शनिवार को 4, 9, 14 तिथियाँ ''सिद्धा कहलाती'' है अर्थात साथ में तिथि व वार हो उस दिन किया कार्य सिद्ध या पूर्ण होता है।

मास शून्य तिथियाँ – चैत्र मास में दोनों पक्षो की अष्टमी और नवमी, वैशाख में दोनों पक्षों की द्वादशी, ज्येष्ठ मास में कृष्णपक्ष की चतुदर्शी व शुक्लपक्ष की त्रयोदशी, आषाढ़ में कृष्ण पक्ष की षष्ठी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी, श्रावण मास में दोनों पक्षों की द्वितीया व तृतीया, भाद्र मास में दोनों पक्षों की प्रतिपदा व द्वितीया, अश्विन में दोनों पक्षो की दशमी व एकादशी, कार्तिक में कृष्ण पक्ष की पंचमी व शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, मार्गशीर्ष या अगहन में दोनों पक्षो की सप्तमी व अष्टमी, पौष में दोनों पक्षों की चतुर्थी व पंचमी, माघ में कृष्ण पक्ष की पंचमी व शुक्ल पक्ष की षष्ठी एवं फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और शुक्ल पक्ष की तृतीया ''मास शून्य तिथियाँ'' कहलाती हैं, अर्थात मास शून्य तिथियों में किये कार्य सफल नहीं होते हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

दग्धा विष हुताशन योग संज्ञक तिथियाँ – निम्न तिथियों में कार्य प्रारम्भ करने से विध्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

वर	रविवार	सेमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
दग्धा	12	11	5	3	6	8	9
विष	4	6	7	2	8	9	7
हुताशन	12	6	7	8	9	10	11

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

ज्योतिष विज्ञान या अंधविश्वास

एक ऐसी पुस्तक जिसमें प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों का वर्णन, ज्योतिष की उपयोगिता, ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान में अंधविश्वास क्यों व कैसे प्रवेश कर गया एवं ज्योतिष को आधुनिक विज्ञान के समान कैसे प्रयोग किया जाये, जैसे विभिन्न कारणों व समाधान बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरी तरफ पुस्तक में ज्योतिष विज्ञान के वैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डालने का अद्वितीय प्रयास किया गया है, इस प्रकार यह पुस्तक ज्योतिष सीखने के लिये एवं ज्योतिषियों के ज्ञान वर्द्धन के लिये वरदान साबित होगी।

लेखक से सम्पर्क हेतु:

Email: *acharyarajjan@educreation.in*

www.bhoojyotish.com | www.bhoodharam.com

Also available as an eBook

ASTROLOGY

ISBN 978-81-923735-3-9

9 788192 373539 >

EDUCREATION PUBLISHING (Delhi)

www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.